संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

पूर्वांचल का सतत् विकास

मुद्दे, रणनीति एवं भावी दिशा

उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल क्षेत्र वैदिक सभ्यता, सनातन धर्म, बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म व संस्कृति का प्रमुख स्थल रहा है। इसी क्षेत्र में राम जानकी मार्ग, बौद्ध एवं नाथ परम्परा विद्यमान हैं। आदिकाल से ही अयोध्या, काशी, प्रयाग, गोरखपुर, कुशीनगर, देवीपाटन उत्तर प्रदेश के विशिष्ट सांस्कृतिक एवं आर्थिक केन्द्र रहे हैं।

मुद्दे

उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल क्षेत्र मूर्त एवं अमूर्त संस्कृति तथा मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनो की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध शाली हैं। इनका सम्यक् उपयोग, संरक्षण एवं संवर्धन पूर्वांचल के विकास हेतु अत्यंत आवश्यक हैं।

रणनीति

सक्रिय जन सहभागिता, अवस्थापना सुविधाओं का विकास, प्रशिक्षित मानवीय संसाधन की उपलब्धता एवं सांस्कृतिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने हेतु एक समन्वित रणनीति बनाये जाने की आवश्यकता हैं।

सतत विकास

संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र की मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में स्मारकों, दुर्लभ अभिलेखों, पाण्डुलिपियों, संगीत, नृत्य, गायन, नाट्य कला, लोक परम्परा एवं विविध संस्कारों के समुचित संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सतत् प्रयासरत है।

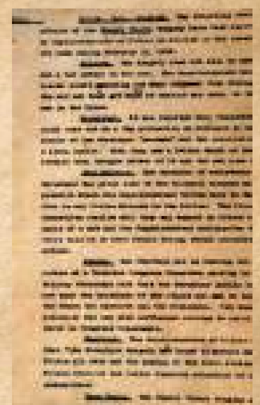

कार्यक्रम

संस्कृति निदेशालय द्वारा नियमित रूप से पूर्वांचल क्षेत्र में विविध अवसरों यथा कबीर जयन्ती, लमही महोत्सव, बुढ़वा मंगल, देव दीपावली, गोरखपुर महोत्सव, राष्ट्रीय एकता दिवस, मिशन शक्ति, वाल्मीकि जयन्ती, दीपोत्सव, रामायण मेला आदि में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित/प्रायोजित किये जाते हैं। निःसन्देह यह कृत्य पूर्वांचल की प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा के संरक्षण, संवर्धन के साथ-साथ स्थानीय कलाकारों को रोजगार के अवसर भी प्रदान करने में सहायक है।

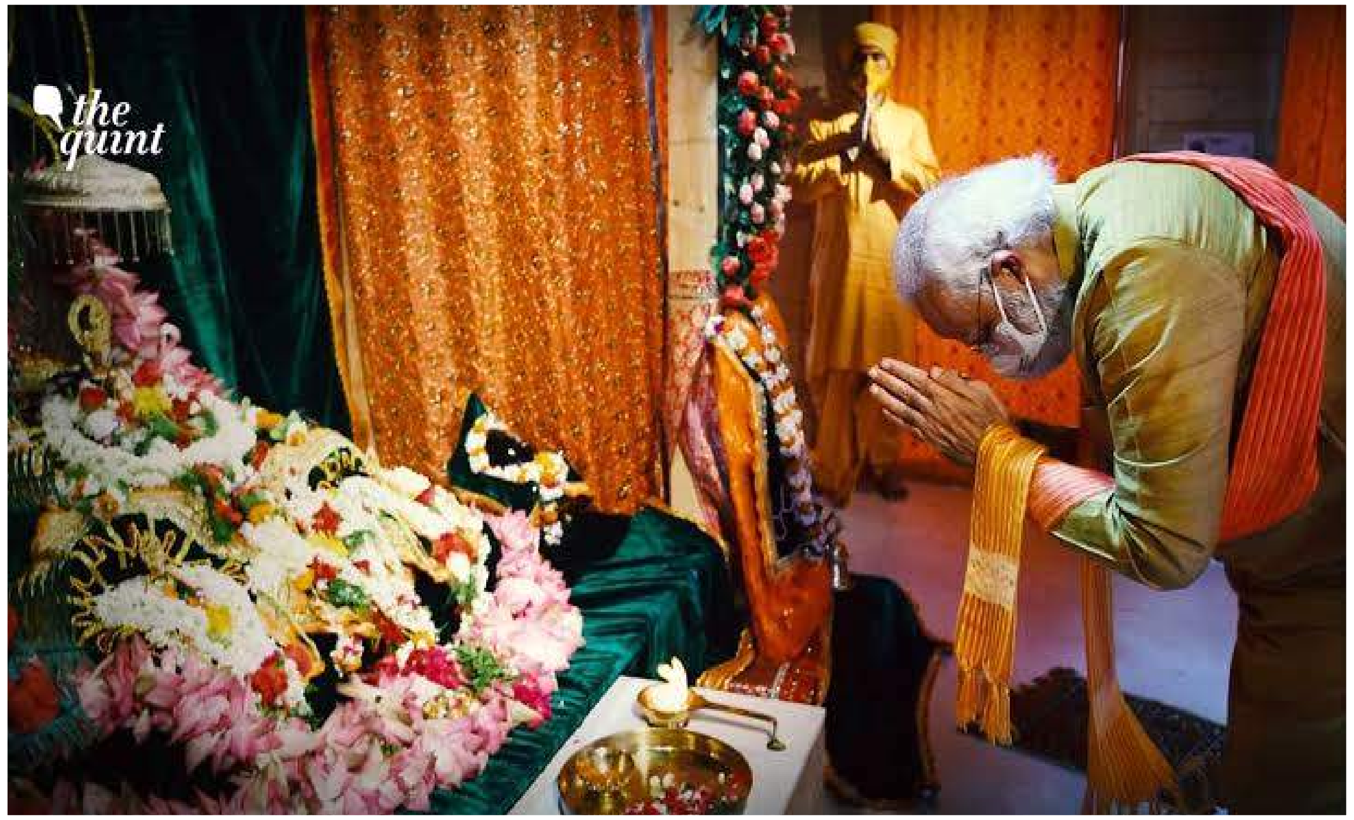

मिशन शक्ति
नारी सुरक्षा
नारी सम्मान
नारी स्वावलंबन
शारदीय नवरात्र, 2020 – बासन्तिक नवरात्र, 2021

मूर्ति निर्माण

देश की महान विभूतियों से प्रेरणा प्राप्त करने हेतु एवं उनकी स्मृति को जनमानस में बनाये रखने हेतु विभाग द्वारा पूर्वांचल क्षेत्र में महन्त अवैद्यनाथ जी एवं महन्त दिग्विजय नाथ जी की मूर्तियों का निर्माण कराया गया है।

प्रेक्षागृह/ अकादमी की स्थापना

जनसामान्य की सांस्कृतिक अभिरूचि को समुन्नत करने के उद्देश्य से पूर्वांचल के विविध क्षेत्रों–गोरखपुर, आज़मगढ़, अयोध्या आदि स्थलों पर आधुनिक प्रेक्षागृह/पीठ की स्थापना कार्य कराया जा रहा है। इसके अतिरिक्त थारू जनजाति की संस्कृति के संरक्षण हेतु इमलिया कोडर, बलरामपुर में संग्रहालय तथा संत कबीर नगर में कबीर अकादमी की स्थापना का कार्य भी प्रगति पर है।

वृद्ध एवं विपन्न कलाकारों को मासिक पेंशन

संस्कृति विभाग द्वारा क्रियान्वित 'वृद्ध एवं विपन्न कलाकारों को मासिक पेंशन योजना' के अन्तर्गत पूर्वांचल क्षेत्र से सम्बन्धित वृद्ध एवं विपन्न कलाकारों को नियमित रूप से मासिक पेंशन प्रदान की जा रही है।

कार्य योजना

समस्या-1 उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र की प्रमुख समस्या अत्यधिक जनसंख्या, निर्धनता एवं अशिक्षा हैं।

समाधान- सांस्कृतिक परम्पराओं, कार्यकलापो का विस्तार एवं कला, संस्कृति से संबंधित रोजगारपरक प्रशिक्षण की व्यवस्था तथा सक्रिय जनसहभागिता सुनिश्चित किया जाना आवश्यक हैं।

पूर्वांचल क्षेत्र पुरातात्विक महत्व के अवशेषों के दृष्टि से अत्यंत विशिष्ट है। सोनभद्र जीवाश्म पार्क में पाये गये जीवाश्म लगभग 1400 मिलियन वर्ष पुराने हैं।

मिर्जापुर, सोनभद्र में चित्रित शैलाश्रय, पाषाणयुगीन प्रस्तर उपकरण, चुनार, अहरौरा (मिर्जापुर) स्थित अशोककालीन अभिलेख, राजा नहुष का किला (घोसी, मॅऊ), पक्का कोट (बलिया), सैदपुर, भीतरी के टीले (गाजीपुर) उल्लेखनीय है।

मिर्जापुर, सोनभद्र के क्षेत्र में पर्वतारोहण, वाटर राफ्टिंग ''फारेस्ट ट्रैकिंग'' एवं वाटर स्पोर्ट्स की असीम सम्भावना भी है। भारत के पर्यटन मानचित्र में उक्त पुरास्थलों को सम्मिलित करने, 'कैरियर' के रूप में पुरातत्व विज्ञान को चयन करने में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ पूर्वांचल क्षेत्र में पर्यटन को भी बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

संस्कृति विभाग के अंतर्गत राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर, राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर एवं राजकीय बौद्ध संग्रहालय, पिपरंवा, हस्तशिल्प में रामायण संग्रहालय, अयोध्या स्थापित हैं। उक्त संग्रहालयों में भगवान बुद्ध तथा बौद्ध धर्म से सम्बन्धित अमूल्य कलाकृतियां संरक्षित हैं। बौद्ध परिपथ के अंतर्गत उक्त तीन बौद्ध संग्रहालय को सम्मिलित किये जाने से न केवल सांस्कृतिक पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा वरन् भारतीय संस्कृति के सम्यक् प्रचार-पसार में भी बल प्राप्त होगा।

अभिलेख प्रदर्शनियों / अभिलेख प्रबंध, संरक्षण सम्बन्धी कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण सत्रों के आयोजन से क्षेत्र के इतिहास के परास्नातक विद्यार्थियों को शासकीय अभिलेखागारों एवं प्राईवेट अभिलेखागारों जैसे - टाटा आर्काइव्ज़ में रोजगार के नवीन अवसर प्राप्त हो सकेंगे।

स्वदेश

हिन्दी साप्ताहिक पत्र।

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं—
वह हृदय नहीं है, पत्थर है; जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

79

भाग ६ | विजया दशमी, सम्वत् १६८१ वि० | संख्या ३८-३६

भावी-क्रान्ति।

[ले०—श्री अनूप शर्मा बी० ए०।]

क्रान्ति की उषा से होगा रक्त भारतीय व्योम,
ताव भरा तेह का तरणि तमके ही गा।
भारी राज नीति के उदधि के उभारने को,
चारु कालचक्र चन्द्रमा सा चमके ही गा।
वैरियों का दमन शमन होगा शक्ति ही से
युद्ध घोषणा को कोई घर धमके ही गा।
कायरो ! क्यों लेते हो कलंक को अकारण ही,
भारत के भाग्य का सितारा चमके ही गा।

पार करना है तुच्छ भावों की तलैय्या नहीं,
लांघनो है प्रचुर प्रवाह पारावार को।
दौड़ना भी दमन दुनाली ही के सामने है,
स्वीकृत 'अनूप' करना है नहीं हार को।
भोगना स्वराज्य है विदेशी राज्य नाशना है,
देना अवलम्ब है स्वभूमि निराधार को।
जैसे बने तैसे शीघ्र हाथ से विरोधियों के,
छीन लो हे वीरो! जन्म सिद्ध अधिकार को।

शान्ति की विभावरी में क्रान्ति के उठे हैं मेघ,
भ्रान्ति की चली है वायु भ्रान्ति सरसावे है।
गौरव गंभीर जन्मजात वीर गांधी जी का,
गोरी गौरमेन्ट पै गजब गाज ढावे है।
मेरे जान अन्त होगा देश में कुशासन का,
ज्योतिषी 'अनूप' रेखा खैंचि कै बतावै है।
भूधर भविष्य से भगीरथ से भारत पै,
भागीरथी शोणित की उमगति आवै है।

उन्नति के पथ में विरोधियों को भ्रान्ति होगा,
भारतीय भूमि में फिरेंगे भूले भटके।
देश द्रोहियों की क्रूर छाती पै प्रहार होगा,
पाप के त्रिशूल के बहेंगे घाव टटके।
[illegible] 'अनूप' अनहोनी द्रुत होनी होगी,
तरुण स्वदेश जब लेगा लोहा डटके।
गांधी नेह नेजा फाड़ देगा भेजा वैरियों का
भेजा भेजा होयगा कलेजा फट फटके।

भातखण्डे संगीत संस्थान अभिमत विश्वविद्यालय की एक इकाई काशी में स्थापित किये जाने से प्राचीन गुरू-शिष्य परम्परा, बनारस घराने की शैली-होरी, दादरा आदि को बल मिलेगा तथा संगीत विद्या में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु रोजगार के नये द्वार भी खुलेंगे।

पूर्वांचल क्षेत्र में कला प्रदर्शनियों-चित्रकला, मूर्तिकला, टेराकोटा विषयक कार्यशालाओं का नियमित आयोजन भी स्थानीय कलाकारो को रोजगार के नवीन अवसर प्रदान करेगा।

प्रस्तुतपरक रंगमंच/संगीत कार्यशालाओं का नियमित आयोजन इस क्षेत्र की समृद्ध शाली रंगमंच एवं संगीत परम्परा को समुन्नत करने में सहायक सिद्ध होगा तथा युवाओं हेतु थियेटर, टी.वी. सीरियल एवं फिल्म क्षेत्र में रोजगार के नवीन अवसरों के सृजन में भी सहायक होगा।

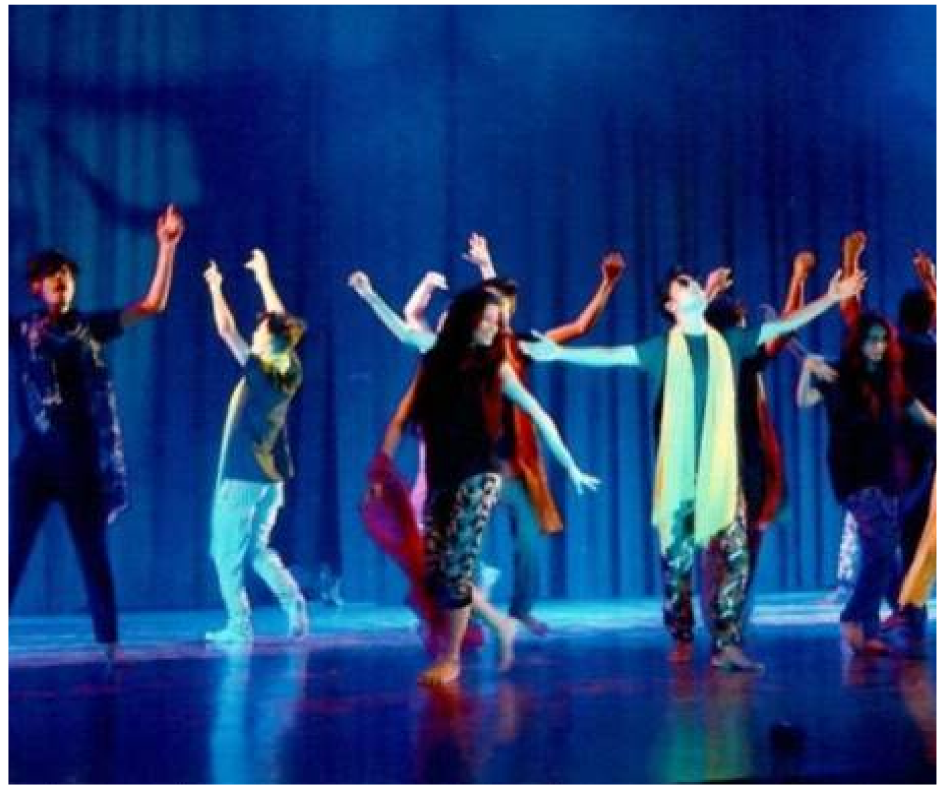

पर्यटन, सांस्कृतिक समरसता एवं लोक कलाकारों को रोजगार के अवसर प्रदान किये जाने के दृष्टि से अनवरत रामलीला मंचन की भांति लोक नाट्य आदि विधाओं, निर्गुण भजन का अनवरत गायन रोजगार सृजन एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अत्यंत सहायक होगा।

जैन धर्म एवं संस्कृति की सनातन पृष्ठभूमि उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल क्षेत्र है। जैन धर्म के 24 तीर्थकरों में से 12 तीर्थकरों की जन्म भूमि पूर्वांचल क्षेत्र ही रही है। जैन तीर्थकरों के जन्म स्थलों पर वार्षिक मेला, संगोष्ठी, स्थायी वर्जुअल प्रदर्शनी के माध्यम से सामाजिक सद्भाव एवं सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

समस्या – 2 कृषि योग्य छोटी जोतें तथा कृषि क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता जिसके फलस्वरूप पूर्वांचल के स्थानीय निवासियों की उत्पादकता एवं क्रय शक्ति अत्याधिक न्यून हैं।

संस्कृति से संबंधित हस्तशिल्प एवं विविध कलाओं को प्रोत्साहित करने से ''सर्विस सेक्टर'' को बढ़ावा मिलेगा, बेरोजगारी तथा न्यून क्रय शक्ति की समस्या का भी समाधान होगा।

समस्या – 3 अवस्थापना सुविधा का अभाव पूर्वांचल क्षेत्र के विकास में एक प्रमुख बाधा हैं।

समाधान– कलाग्रामों की स्थापना, ग्रामों को कलात्मक बनाने, यातायात एवं संचार के साधनों का विस्तारीकरण, अतिथि गृह/होटलों का निर्माण से देश तथा विदेश के पर्यटक पूर्वांचल के विशिष्ट सांस्कृतिक स्थलों के भ्रमण हेतु आकर्षित होंगे।

लोग संगीत एवं नृत्य में अग्रणी ग्रामों/क्षेत्रों जैसे हरिहरपुर, आज़मगढ़ आदि हेतु पायलट प्रोजेक्ट तैयार कर इनका सम्यक् क्रियान्वयन भी किया जाना अत्यन्त उपयोगी होगा।

समस्या– 4 सांस्कृतिक पर्यटन का विकास

समाधान– भोजपुरी क्षेत्र भारत का एकमात्र ऐसा क्षेत्र हैं, जहां से लगभग 200 वर्ष पूर्व अनेक भारतीय विश्व के अनेक देशों – मॉरीशस, सुरीनाम आदि में गिरमिटिया श्रमिक के रूप में गये तथा आज उनके वंशज इन देशों के शासन, प्रशासन शिक्षा आदि विविध क्षेत्रों में उच्च पदों पर कार्यरत हैं। इन देशों में पूर्वांचल की लोक संस्कृति–फरुवाही, हुड़का, सोहर आदि की समृद्ध परम्परायें आज भी जिन्दा हैं। इस दृष्टि से अन्तर्राज्यीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पारस्परिक सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करना समय की मांग हैं।

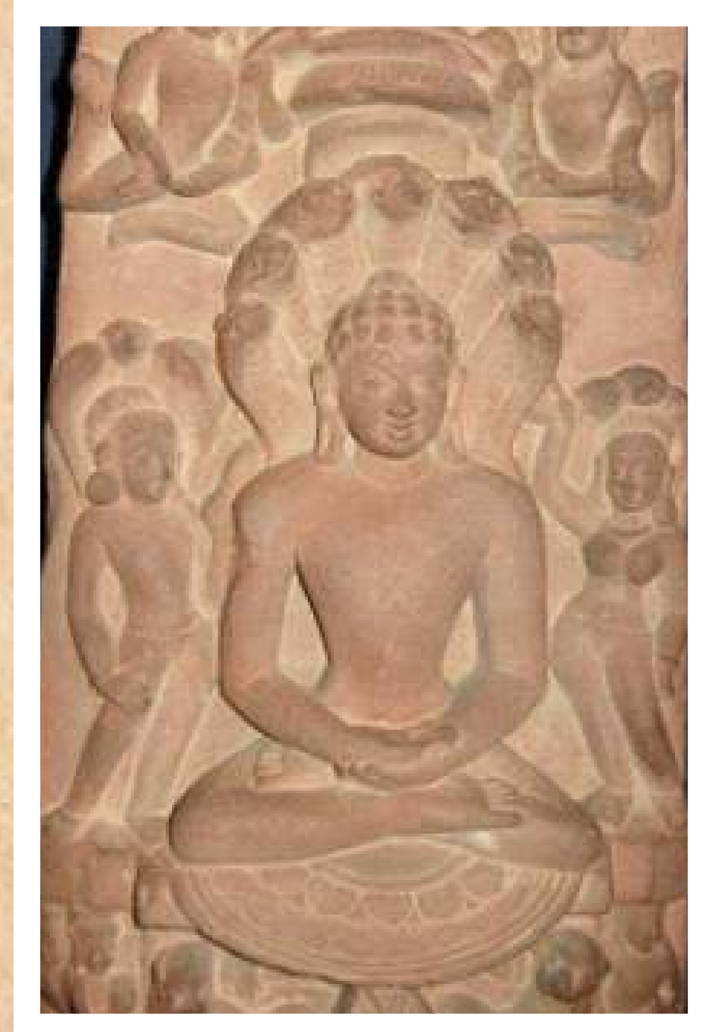

उत्तर प्रदेश के समस्त जनपदों से सम्बन्धित किसी विशिष्ट सांस्कृतिक पक्ष जैसे-पुरास्थल, लोकगीत, लोकनृत्य, लोक वादन, जनजातीय नृत्य, शास्त्रीय संगीत पर बल देने से सांस्कृतिक पर्यटन में अभिवृद्धि होगी।

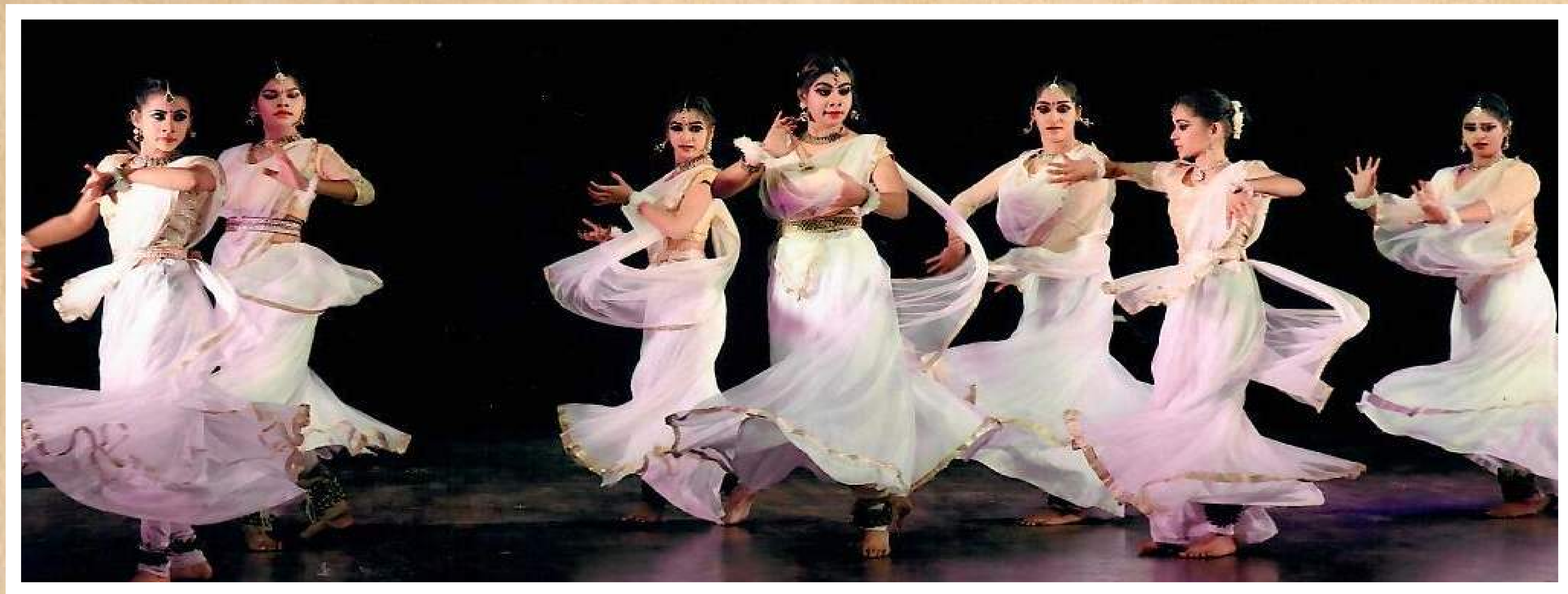

धन्यवाद

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश